गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन

खोज गाँधीजी की

गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन, जलगाँव की मासिक पत्रिका; अक्तूबर–नवम्बर, २०१९

बा–बापू१५० १८६९–२०१९

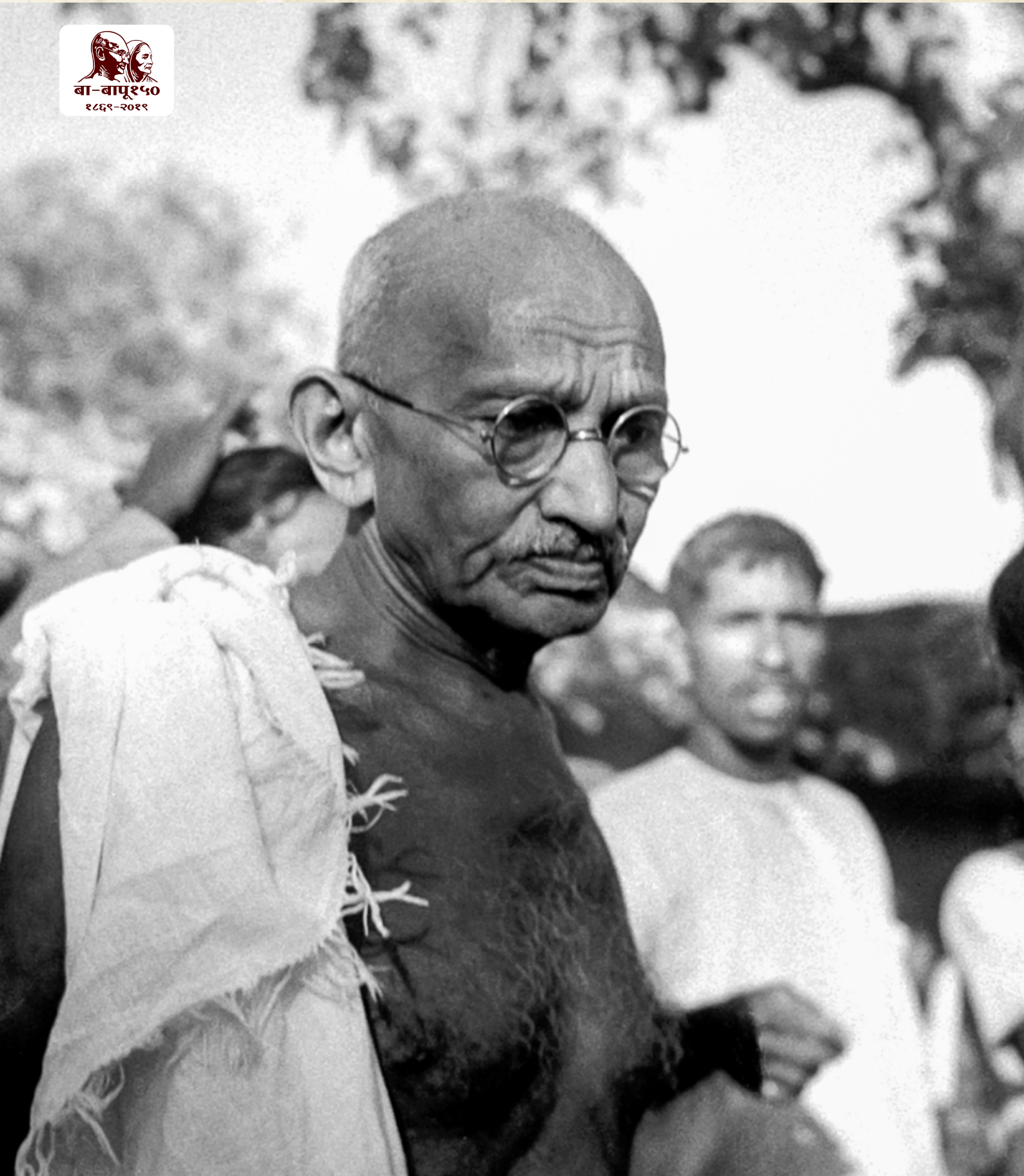

गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन, जलगाँव द्वारा प्रकाशित –

खोज गाँधीजी की

सत्य व अहिंसापरक विचारों को समर्पित

वर्ष–१, अंक ९ □ अक्तूबर–नवम्बर, २०१९

शक्ति शारीरिक क्षमता से नहीं आती है। यह एक अदम्य इच्छा शक्ति से आती है। – महात्मा गाँधी

इस अंक में– .....पृष्ठ

संपादकीय .....
प्रिटोरिया जाते हुए १
Sustainability: Learning from Gandhi ३
आज की समाज रचना – *(डॉ. भवरलालजी जैन)* ५
फाउण्डेशन की गतिविधियां.....७–१७

संस्थापक
स्व. डॉ. भवरलालजी जैन

प्रेरक
स्व. न्या. चंद्रशेखर धर्माधिकारी

प्रबंध संपादक
अशोक जैन

संपादक
अश्विन झाला

संपादकीय मंडल
डॉ. श्रीप्रकाश पाण्डेय, भुजंगराव बोबडे

कला एवं अक्षर–सज्जा
योगेश संधानसिवे एवं भूषण मोहरीर

संपादकीय कार्यालय
गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन,
गाँधी तीर्थ, जैन हिल्स, पोस्ट बॉक्स संख्या 118, जलगाँव – 425 001.
दूरभाष : 0257-2260011/22, 2264801/03,
मो. : 9404955272
फैक्स : 0257-2261133
वेबसाइट : www.gandhifoundation.net
ई–मेल : info@gandhifoundation.net
CIN No. : U73200MH2007NPL169807

गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन (स्वामित्व) के लिए खोज गाँधीजी की यह मासिक मुद्रक, प्रकाशक अशोक भवरलाल जैन, संचालक, गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन ने आनंद पब्लिकेशन्स, १०६/१, मुसली फाटा, ता.धरणगाँव, जि. जलगाँव– ४२५११०३, महाराष्ट्र से मुद्रित करके गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन, गाँधी तीर्थ, जैन हिल्स, पोस्ट बॉक्स नं. ११८, जलगाँव–४२५००१, महाराष्ट्र से प्रकाशित किया। संपादक – अश्विन भामाभाई झाला*
(**पी.आर.बी. कायदे के अनुसार संपादकीय जिम्मेदारी इनकी है।*)

मुखपृष्ठ छायाचित्र: महात्मा गाँधी, शांति यात्रा के दौरान, बिहार, मार्च २८, १९४७।

संपादकीय...

राजनीति या लोक–नीति?

वर्तमान समय में सबसे अधिक चर्चित मुद्दा अगर कोई है तो वह है राजनीति, वैसे देखा जाए तो हमारे देश के लगभग सभी कस्बे और शहर राजनीति के प्रभाव में इतने प्रभावित हो गए हैं की शायद ही कोई जगह बाकी होगी जहाँ राजनीति की चर्चा नहीं होती होगी। अगर सरल शब्दों में कहे तो हमारे जीवन का महत्त्वपूर्ण भाग राजनीति के साथ जुड़ा हुआ रहता है। होना भी चाहिए, क्योंकि आखिरकार यह लोक–तंत्र का एक बड़ा हिस्सा जो है। वैसे भी बहुत कम ऐसे किस्से आते हैं जहाँ 'प्रजा ही राजा' की भावना दिखाई देती है।

राजनीति का मूल्य यह है कि व्यक्ति केंद्रित राजनीति नहीं बल्कि विचार केंद्रित राजनीति होनी चाहिए। जब भी राजनीति की बात आती है वह तुलनात्मक बन जाती है, कौन सा पक्ष या कौन सी सरकार उत्कृष्ट है? इस बात पर पहुंच ही जाते हैं और हमारा मूल्यांकन क्या रहता है? वही सरकार श्रेष्ठ है जो विकास की नीति को सार्थक करें। पर समझना यह है कि हम विकास की परिभाषा को किस ढांचे में देखते हैं? क्या हमारे लिए मनुष्य का विकास जिसमें बौद्धिक, आध्यात्मिक और पर्यावरणीय स्तर पर आवश्यक है जहाँ प्रजा भयमुक्त रूप से अपना अस्तित्व टिकाऐं या हमारे लिए बुनियादी ढांचे का निर्माण करना विकास है? निर्णय हमें करना है।

जब इन मुद्दों के आधार पर देखते हैं तब निश्चित रूप से मनुष्य का समग्र विकास ही विकास की अवधारणा बननी चाहिए। इस संदर्भ में महान व्यक्तियों के विचारों पर थोड़ा प्रकाश डालते हैं–

राजनीति की बात आती है तब निश्चित रूप से विनोबा जी को याद करना ही चाहिए, क्योंकि उन्होंने राजनीति को लोक–नीति के रूप में परिभाषित कर लोक–तंत्र को नया आयाम दिया। विनोबा जी राजसत्ता के बारे में कहते हैं कि ''जिसके राज्य में शांति और व्यवस्था रहती है और साधारण राज्यकर्ता भी जहाँ सोचते हैं कि 'बहुत ज्यादा परिवर्तन न हो, जितना हो सके, उतना ही परिवर्तन किया जाय', वही उत्तम राज्य–व्यवस्था है।'' मेरुतुंगाचार्य ने लिखा है, ''बुद्धिमान मंत्री वह है, जो बिना कर लगाए ही कोष की वृद्धि करता है, बिना किसी की हिंसा किए देश की रक्षा करता है तथा बिना युद्ध किए ही राज्य का विस्तार करता है।'' गाँधीजी का विचार इस संदर्भ में स्पष्ट है। वे कहते हैं कि ''हम तो राम–राज्य का अर्थ स्वराज्य, धर्मराज्य, प्रजाराज्य करते हैं। वैसा राज्य जनता के बलवान बनने पर ही संभव है।'' इस संदर्भ में राजेन्द्र प्रसाद थोड़ी चेतावनी देते हुए कहते हैं कि ''जनता ऐसे लोगों को उखाड़ फेंकेगी, जो अपने श्रम के फल को चखने में लग गए हैं।''

उपरोक्त कथनों में कहीं बुनियादी ढांचे की बात कही हो ऐसा दिखाई नहीं देता। अगर यह चित्र स्पष्ट है तो ऐसा कहना जायज होगा कि विकास की हमारी परिभाषा में व्यक्ति को नजरंदाज कर किया जाने वाला विकास किसी भी रूप से सार्थक और शाश्वत नहीं है। इस विषय पर हमें थोड़ा गौर करने की आवश्यकता हैं...

इस अंक में हम हमारे पाठकों के लिए गाँधीजी की आत्मकथा से अगला प्रकरण, डॉ. भवरलाल जैन द्वारा लिखित किताब 'आज की समाज रचना' से लेख, हमारे छात्रों द्वारा शाश्वतता पर लिखा हुआ लेख तथा फाउण्डेशन की गतिविधियां प्रस्तुत कर रहे हैं।

धन्यवाद,

(अश्विन झाला)

'सत्य के प्रयोग अथवा आत्मकथा'

प्रिटोरिया जाते हुए

*'**खोज गाँधीजी की**' के प्रत्येक अंक में महात्मा गाँधी द्वारा लिखे 'सत्य के प्रयोग अथवा आत्मकथा' से एक लेख धारावाहिक रूप में दिया जा रहा है। इसके पीछे उद्देश्य यह है कि जनमानस महात्मा गाँधी की आत्मकथा से उन्हीं के शब्दों में परिचित हो सके। दक्षिण अफ्रीका की गाथा को दर्शाता हुआ प्रस्तुत है आत्मकथा से अगला प्रकरण।*

– संपादक

मैं डरबन में रहनेवाले ईसाई हिन्दुस्तानियों के संपर्क में भी तुरंत आ गया। वहाँ की अदालत के दुभाषिया मि. पॉल रोमन कैथोलिक थे। उनसे परिचय किया और प्रोटेस्टेण्ट मिशन के शिक्षक स्व. मि. सुभान गॉडफ्रे से भी परिचय हुआ। इन्हीं के पुत्र जेम्स गॉड फ्रे यहाँ दक्षिण अफ्रीका के भारतीय प्रतिनिधि-मंडल में पिछले साल आये थे। इन्हीं दिनों स्व. पारसी रुस्तमजी से परिचय हुआ, और तभी स्व. आदमजी मियांखान के साथ जान-पहचान हुई। ये सब भाई अभी तक काम के सिवा एक-दूसरे से मिलते न थे, लेकिन जैसा कि हम आगे चलकर देखेंगे, बाद में ये एक-दूसरे के काफी नजदीक आये। मैं इस प्रकार जान-पहचान कर रहा था कि इतने में फर्म के वकील की तरफ से पत्र मिला कि मुकदमे की तैयारी की जानी चाहिये और खुद अब्दुल्ला सेठ को प्रिटोरिया जाना चाहिये अथवा किसी को वहाँ भेजना चाहिये।

अब्दुल्ला सेठ ने वह पत्र मुझे पढ़ने को दिया और पूछा, ''आप प्रिटोरिया जायेंगे?'' मैंने कहा, ''मुझे मामला समझाइए, तभी कुछ कह सकूँगा। अभी तो मैं नहीं जानता कि मुझे वहाँ क्या करना होगा।'' उन्होंने अपने मुनीमों से कहा कि वे मुझे मामला समझा दें।

मैंने देखा कि मुझे ककहरे से शुरू करना होगा। जब मैं जंजीबार में उतरा था तो वहाँ की अदालत का काम देखने गया था। एक पारसी वकील किसी गवाह के बयान ले रहे थे और जमा-नामे के सवाल पूछ रहे थे। मैं तो जमा-नामे में कुछ समझता ही न था। बही-खाता न तो मैंने हाईस्कूल में सीखा था और न विलायत में।

मैंने देखा कि इस मामले का दार-मदार बहियों पर है। जिसे वही-खाते की जानकारी हो वही इस मामले को समझ और समझा सकता है। जब मुनीम नामे की बात करता, तो मैं परेशान होता। मैं पी. नोट का मतलब नहीं जानता था। कोश में यह शब्द मिलता न था। जब मैंने मुनीम के सामने अपना अज्ञान प्रकट किया तब उससे पता चला कि पी. नोट का मतलब प्रामिसरी नोट है। मैंने बही-खाते की पुस्तक खरीदी और पढ़ डाली। कुछ आत्म-विश्वास उत्पन्न हुआ। मामला समझ में आया। मैंने देखा कि अब्दुल्ला सेठ बही-खाता लिखना नहीं जानते थे। पर उन्होंने व्यावहारिक ज्ञान इतना अधिक प्राप्त कर लिया था कि वे बही-खाते की गुत्थियाँ फौरन सुलझा सकते थे। मैंने उनसे कहा, ''मैं प्रिटोरिया जाने को तैयार हूँ।'' सेठ ने पूछा ''आप कहाँ उतरेंगे?''

मैंने जवाब दिया, ''जहाँ आप कहें।''

''तो मैं अपने वकील को लिखूँगा। वे आपके लिए ठहरने का प्रबंध करेंगे। प्रिटोरिया में मेरे मेमन दोस्त हैं। उन्हें मैं अवश्य लिखूँगा, पर उनके यहाँ आपका ठहरना ठीक न होगा। वहाँ हमारे प्रतिपक्षी की अच्छी रसोई है। आपके नाम मेरे नीजी कागज-पत्र पहुँचें और उनमें से कोई उन्हें पढ़ ले, तो हमारे मुकदमे को नुकसान पहुँच सकता है। उनके साथ जितना कम संबंध रहे उतना ही अच्छा है।''

मैंने कहा, ''आपके वकील जहाँ रखेंगे वही मैं रहूँगा, अथवा मैं कोई अलग घर खोज लूँगा। आप निश्चिन्त रहिये, आपकी एक भी व्यक्तिगत बात बाहर न जायेगी। पर मैं मिलता-जुलता तो सभी से रहूँगा। मुझे तो प्रतिपक्षी से मित्रता कर लेनी है। मुझसे बन पड़ा तो मैं इस मुकदमें

को आपस में निबटाने की भी कोशिश करूंगा। आखिर तैयब सेठ आपके रिश्तेदार ही तो हैं न?''

प्रतिपक्षी स्व. तैयब हाजी खानमहम्मद अब्दुल्ला सेठ के निकट सम्बन्धी थे।

मैंने देखा कि मेरी इस बात पर अब्दुल्ला सेठ कुछ चौंके। पर उस समय तक मुझे डरबन पहुँचे छह-सात दिन हो चुके थे। हम एक-दूसरे को जानने और समझने लग गये थे। मैं अब 'सफेद हाथी' लगभग नहीं रहा था। वे बोले:

''हाँ...आ...आ, यदि समझौता हो जाये, तो उसके जैसी भली बात तो कोई है ही नहीं। पर हम रिश्तेदार हैं, इसलिए एक-दूसरे को अच्छी तरह पहचानते हैं। तैयब सेठ जल्दी माननेवाले नहीं हैं। हम भोलापन दिखायें, तो वे हमारे पेट की बात निकलवा लें और फिर हमको फँसा लें। इसलिए आप जो कुछ करें सो होशियार रहकर किजिये।''

मैंने कहा, ''आप तनिक भी चिंता न करें। मुझे मुकदमें की बात तैयब सेठ से या किसी और से करने की आवश्यकता ही नहीं है। मैं तो इतना ही कहूँगा कि आप दोनों आपस में झगड़ा निबटा लें, तो वकीलों के घर न भरने पड़ें।''

मैं सातवें या आठवें दिन डरबन से रवाना हुआ। मेरे लिए पहले दर्जे का टिकट कटाया गया। वहाँ रेल में सोने की सुविधा के लिए पाँच शिलिंग का अलग टिकट कटाना होता था। अब्दुल्ला सेठ ने उसे कटाने का आग्रह किया, पर मैंने हठवश, अभिमानवश और पाँच शिलिंग बचाने के विचार से बिस्तर का टिकट कटाने से इनकार कर दिया।

अब्दुल्ला सेठ ने मुझे चेताया, ''देखिये, यह देश दूसरा है, हिन्दुस्तान नहीं है। खुदा की मेहरबानी है। आप पैसे की कंजूसी न कीजिए। आवश्यक सुविधा प्राप्त कर लीजिए।''

मैंने उन्हें धन्यवाद दिया और निश्चिंत रहने को कहा।

ट्रेन लगभग नौ बजे नेटाल की राजधानी मेरित्सबर्ग पहुँची। यहाँ बिस्तर दिया जाता था। रेल्वे के किसी नौकर ने आकर पूछा, ''आपको बिस्तर की जरूरत है?''

मैंने कहा, ''मेरे पास अपना बिस्तर है।''

वह चला गया। इस बीच एक यात्री आया। उसने मेरी तरफ देखा। मुझे भिन्न वर्ण का पाकर वह परेशान हुआ, बाहर निकला और एक दो अफसरों को लेकर आया। किसी ने मुझे कुछ न कहा। आखिर एक अफसर आया। उसने कहा ''इधर आओ। तुम्हें आखिरी डिब्बे में जाना है।''

मैंने कहा, ''मेरे पास पहले दर्जे का टिकट है।''

उसने जवाब दिया, इसकी कोई बात नहीं। मैं तुमसे कहता हूँ कि तुम्हें आखिरी डिब्बे में जाना है।

''मैं कहता हूँ, कि मुझे इस डिब्बे में डरबन से बैठाया गया है और मैं इसी में जाने का इरादा रखता हूँ।''

अफसर ने कहा, ''यह नहीं हो सकता। तुम्हें उतरना पड़ेगा, और न उतरे तो सिपाही उतारेगा।''

मैंने कहा, ''तो फिर सिपाही भले उतारे, मैं खुद तो नहीं उतरूँगा।''

सिपाही आया। उसने मेरा हाथ पकड़ा और मुझे धक्का देकर नीचे उतारा। मेरा सामान उतार लिया। मैंने दूसरे डिब्बे में जाने से इनकार कर दिया। ट्रेन चल दी। मैं वेटिंग रूम में बैठ गया। अपना ''हैण्ड-बैग'' साथ में रखा। बाकी सामान को हाथ न लगाया। रेल्वे वालों ने उसे कहीं रख दिया। सरदी का मौसम था। दक्षिण अफ्रीका की सरदी ऊँचाईवाले प्रदेशों में बहुत तेज होती है। मेरित्सबर्ग इसी प्रदेश में था। इससे ठण्ड खूब लगी। मेरा ओवर-कोट मेरे सामान में था। पर सामान माँगने की हिम्मत न हुई। फिर अपमान हो तो? ठण्ड से मैं काँपता रहा। कमरे में दिया न था। आधी रात के करीब एक यात्री आया। जान पड़ा कि वह कुछ बात करना चाहता है, पर मैं बात करने की मन:स्थिति में न था।

मैंने अपने धर्म का विचार किया: 'या तो मुझे अपने अधिकारों के लिए लड़ना चाहिये या लौट जाना चाहिये, नहीं तो जो अपमान हों उन्हें सहकर प्रिटोरिया पहुँचना चाहिये और मुकदमा खतम करके देश लौट जाना चाहिये। मुकदमा अधूरा छोड़कर भागना तो नामर्दी होगी। मुझे जो कष्ट सहना पड़ा है, सो तो ऊपरी कष्ट है। वह गहराई तक पैठे हुए महारोग का लक्षण है। यह महारोग है रंग-द्वेष। यदि मुझ में इस गहरे रोग को मिटाने की शक्ति हो, तो उस शक्ति का उपयोग मुझे करना चाहिये। ऐसा करते हुए स्वयं जो कष्ट सहने पड़े सो सब सहने चाहिये और उनका विरोध रंग-द्वेष को मिटाने की दृष्टि से ही करना चाहिये।'

यह निश्चय करके मैंने दूसरी ट्रेन में, जैसे भी हो, आगे ही जाने का फैसला किया।

सबेरे ही सबेरे मैंने जनरल मैनेजर को शिकायत का लम्बा तार भेजा। दादा अब्दुल्ला को भी खबर भेजी। अब्दुल्ला सेठ तुरंत जनरल मैनेजर से मिले। जनरल मैनेजर ने अपने आदमियों के व्यवहार का बचाव किया, पर बतलाया कि मुझे बिना किसी रुकावट के मेरे स्थान तक पहुँचाने के लिए स्टेशन-मास्टर को कह दिया गया है। अब्दुल्ला सेठ ने मेरित्सबर्ग के हिंदू व्यापारियों को भी मुझसे मिलने और मेरी सुख-सुविधा का खयाल रखने का तार भेजा और दूसरे स्टेशनों पर भी इसी आशय के तार रवाना किये। इससे व्यापारी मुझे मिलने स्टेशन पर आये। उन्होंने अपने ऊपर पड़नेवाले कष्टों की कहानी मुझे सुनाई और मुझसे कहा कि आप पर जो बीती है, उसमें आश्चर्य की कोई बात नहीं है। जब हिन्दुस्तानी लोग पहले या दूसरे दर्जे में सफर करते हैं, तो अधिकारियों और यात्रियों कि तरफ से रुकावट खड़ी होती ही है। दिन ऐसी ही बातें सुनने में बीता। रात पड़ी। ट्रेन आयी। मेरे लिए जगह तैयार ही थी। बिस्तर का जो टिकट मैंने डरबन में कटाने से इनकार किया था, वह मेरित्सबर्ग में कटाया, ट्रेन मुझे चार्ल्सटाउन की ओर ले चली।

-'सत्य के प्रयोग अथवा आत्मकथा' से
साभार, पृष्ठ क्र.९९-१०२,
क्रमश:

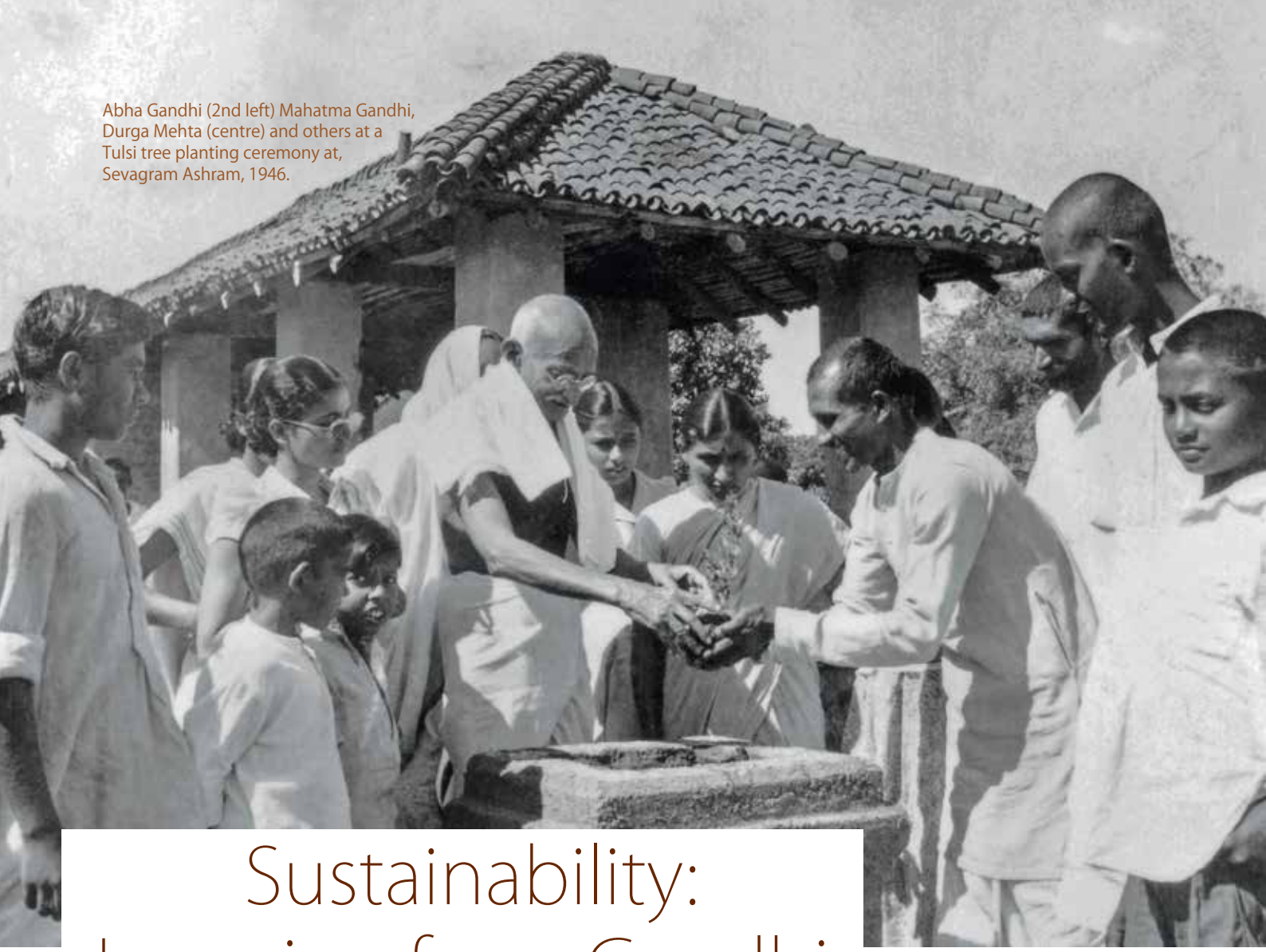

Abha Gandhi (2nd left) Mahatma Gandhi, Durga Mehta (centre) and others at a Tulsi tree planting ceremony at, Sevagram Ashram, 1946.

Sustainability: Learning from Gandhi

As the world is grappling with the ecological crisis, Gandhiji had prophetically, led India into a way of life of phenomenal sustainability. His fundamentals are now the guiding spirit of global agenda such as Millennium Development Goals and Sustainable Development Goals. A team of students of the PG Diploma in Sustainable Rural Reconstruction of the GRF, have brought about the Gandhian insight on sustainability in the following article.

- Editor

Modern life style of humans has led the world to a survival crisis. The earth is getting warmer because of human development efforts. Global land temperature in May 2012 was the warmest May temperature since the record keeping began in 1880.[1] As the climate change intensifies, "one of the scariest prospects is that we will witness large scale ecosystem collapse."[2] We hear that every day a dozen species are getting extinct once for all, because of human intervention. Experts warn that at this rate, life on earth would be endangered.

Right minded people campaign for reducing carbon foot print, to earn carbon credit by undertaking climate resilient production. People who understand the limits to growth argues, like E F Schumacher, for small initiatives by local communities. Religions say, as we have no right to create, we do not have the right to destroy either.

In this respect, humanity is trying to understand how to save life on earth, and make life in tune with it.

Sustainability question emerged as a prominent debate as part of this search.

Gandhiji whose life and work was guided by the principles of Truth and nonviolence, is viewed as one of the protagonists of the sustainability debate. He said that, life is Sat - real, it is part of the Truth or God, and we need to uphold life, unconditionally. Killing or disturbing life of any kind by any means is violence, he argued. For him, nonviolence sustains life, therefore, it is the law of life; and violence takes away life, therefore cannot be the order of life. The uniqueness of Gandhiji was, he created systemic responses to the challenges of life to ensure that life is upheld in all its fullness, in a manner that is sustainable.

Sustainability, in the world of production, is widely understood as an outcome of practices like rain water harvesting, recycling wastes, energy efficiency, clean energy (non-conventional energy such as solar, wind energies), and becoming organic. However, Andrew J. Hoffman, Holcim Professor of Sustainable Enterprise at the University of Michigan, maintains that these are only 'tinkering around the edges' and we need to look for ways to actively transform the enterprise.[3] He argues, it is not sufficient that we try to reduce unsustainability; it is important we strive for creating sustainability.

The term sustainability implies deeper sense of consistency. Present generation understands it as the ability to last long, and 'the capacity of humans to coexist with nature.'[4] In the bodily sense, it is maintaining the homeostasis. In the economic connotation, it means a method that is in harmony with life. It is also defined as the process of producing, distributing and consuming material needs of humans in a manner that is in harmony with 'self, society and nature.'

Digging into the writings and works of Gandhiji, helps us learn the essence of sustainability. He considered that the present greed driven material lifestyle is irreligious and those who are in it appear to be half mad. According to the teaching of the Prophet Mohamed, Gandhi stated, this would be considered a 'satanic civilization', Hinduism calls it 'Black Age'. For, it seeks to immorality in the name of morality and to increase bodily comfort, and it fails miserably even doing so. [5]

Talking about machines, Gandhiji said in his seminal book 'Hind Swaraj' that machines impoverish humanity.[6] When intensified mechanization is brought about, with the intention of serving the humanity, it did so by impoverishing a large section of humans as well as the other species of the earth at large. He was against all machines that replaced fellow humans, or fellow living beings.

Instead, Gandhiji advocated instruments that lessened human drudgery, such as bull driven plough, hand spun charkha. This is however, he cautioned, not to be taken dogmatically, but for the spirit of it. By which he meant, he was not against machines as such, but against those which allowed exploitation and suppression. [7]

As a sustainable way of living, Gandhiji advocated bread labour based living which, on the one hand, while allowing individual to earn only as much as one's body permits, thereby, does not permit him/her to grow in his/her greed, and on the other hand, helped him/her enjoy good health – physical labour being lifestyle gym.

In order to effectuate an ethical life, he compiled a set of values and made people take it as a vow. He called them eleven vows (ekadas vrat). [8]

In order to ensure that our production and distribution do not spend excessive energy in unnecessary transportation, Gandhiji insisted on neighbourhood production and consumption. He called it swadeshi.

His idea of sustainability, is not confined to economics alone. He was talking about a political order that is decentralized, governed by people more directly, to that extent, concrete subjective and healthy. Large systems are likely to be too complex for comprehension by commoners, and to that extent, allow others (experts in the system operation) to dominate and exploit the innocents and less informed people.

From his writings, it is understandable, Gandhi had a more comprehensive idea of sustainability. We can draw four salient features from his thoughts, for sustainability.

a) Economic endeavour must subscribe to the well-being of concerned individual's life, in the sense of empowering the body, enabling the mind, and ennobling the soul.

b) Economic endeavour of individual must be in harmony with the interest of the neighbours and the society. That which is not good for the society cannot be considered to be good for individual, even if it seems to deliver good to someone. There has to be a consistency between individual goal and social purpose.

c) Material progress has to be with self-restraint. Earth is limited. Hence, human greed cannot be the driving force of human consumption. It is human needs, survival requirements that ought to be pursued. Consumption and possession of anything, if the absence of which would not hinder life, would be considered as stealing from mother nature. Accordingly, wealth in excess of what is essential need, is stealing. [9]

d) A life in harmony with the law of nature is considered as a life of Truth and nonviolence. In that sense, Gandhiji was against any act that challenges the dictates and will of nature. Be it modern medicine, mechanization, automation or concentration (be it wealth, power or possessions) that makes humans to live longer and stouter than the mother earth expects one to live. This principle based life is called a life of non-possession. [10]

In this manner, Gandhiji proposed a life of consistency with fellow beings, society (nation) and nature, as a life of truth and nonviolence. It is a life insisting upon the Truth. He called it satyagraha. A life that fights against temptations of all kind and rein mind to lead a life in obedience to the dictate of the Truth.

Reference:

1) *Joe Romm, www.climatewatch.noaa.go/image/2012/global-land-termparature-in-May-2012-is-the-warmest-on-record*
2) *Leslie Chang, Sounds of the Ocean, Genanthro.com,Stories and Conversations about Planetary Change,*
3) *Andrew J. Hoffman, The next phase of business sustainability (2018), Stanford Social Innovation Review, at http://ssir.org/articles/entry/the_next_phase_of_business*
4) *Sustainability, Wikipedia, accessed on Oct 22, 2019.*
5) *M K Gandhi, Hind Swaraj, Navjivan Publishing House, Ahmdedabad, p.33*
6) *M K Gandhi, Hind Swaraj, Navjivan Publishing House, Ahmdedabad, p.88*
7) *M K Gandhi, Hind Swaraj, Navjivan Publishing House, Ahmdedabad, pp.88-91*
8) *The Eleven vows are: Nonviolence, Truth, non-stealing, celibacy, non-possession, bread-labour, control of palate, fearlessness, equal regard for all religions, swadeshi, removal of untouchability (discrimination).*
9) *M K Gandhi, From Yeravda Mandir (Mangal Prabhat) Navjivan Publishing House, Ahmedabad, Chapter on 'non-stealing',*
10) *Ibid, Chapter 'Non-Possession'*

-- Ajaj R.V, Vyshak P.K., Aaquib Siddiqui, Chandrashekhar V Bhise, Pritam Nanvate & Vikesh S Bhagat

Students of the PG Diploma in Sustainable Rural Reconstruction, Gandhi Research Foundation, Jalgaon

आज की समाज रचना

ऋण की सीमा देश के सकल उत्पाद की निर्धारित सीमा से अधिक नहीं होनी चाहिए।

गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन के संस्थापक स्व. डॉ. भवरलालजी जैन एक गंभीर लेखक एवं चिंतक थे। हम आपकी मराठी कृति 'आज की समाज रचना' से 'गतिशील व प्रभावी समाज-रचना हेतु अपेक्षित परिवर्तन' लेख का शेष भाग तथा इस किताब का 'उपसंहार' पाठकों के लिए प्रस्तुत कर रहे हैं।

– संपादक

डॉ. भवरलाल जैन

सरकार द्वारा नागरिकों पर थोपे गए कायदे-कानून सरकार पर भी लागू हों और उसके लिए पूर्वानुमति या अन्य शर्तों के बंधन नहीं होने चाहिए। समाज-नियामक संस्थाएँ, उनकी रचना, कार्यप्रणाली, संविधान और नियम पारदर्शी हों, जिससे किसी भी नागरिक को अपने अधिकारों के लिए किसी भी प्रकार का लालच देने, धोखाधड़ी या चालाकी करने की आवश्यकता न पड़े। ऐसा कोई भी कानून, नियम या प्रावधान नहीं होना चाहिए जिसके आधार पर उसके विरोध में नागरिक न्यायालय की शरण में जा सकें। किसी भी मामलें में नागरिक यदि ईमानदारी से जीना, व्यवहार, बातचीत, विचार आदि करना चाहे तो उसके लिए किसी भी प्रकार का लिखित-अलिखित, प्रत्यक्ष या परोक्ष, बंधन या मनाही न हो। नियामक-संस्था का स्वरूप एवं उस पर प्रभावी कानून सरल, सहज, स्पष्ट, सुबोध, समझने में आसान हों; क्लिष्ट, बहुअर्थी, भ्रम उत्पन्न करने वाले न हों। यदि क्लिष्ट, जटिल कानून होंगे तो नागरिकों को प्रामाणिक रूप से जीवन यापन का अधिकार नहीं मिलेगा।

संक्षेप में कोई भी ऐसा विधान, कानून, विधि, अध्यादेश, अधिनियम, नियम, आदेश, आज्ञाप्ति, प्रावधान, प्रतिज्ञापत्र, कार्यविधि, संहिता जो किसी नागरिक या संस्था को अनैतिक, चालाक, अप्रामाणिक, धोखेबाज या भ्रष्ट एवं भ्रष्टाचारी व्यवहार के लिए उकसाता है, अथवा बाध्य करता है, प्रेरणा देता है, निर्देश देता है, विवश करता है, दबाव ड़ालता है तो ऐसी व्यवस्था अधिकारी के अधिकारों की कक्षा से परे मानना चाहिए।

ऊपर लिखित कानूनों पर गहन विचार होना अत्यंत आवश्यक है। उनका इस निबंध में दिया स्वरूप केवल मार्गदर्शक, स्थूल कल्पना के रूप में ही उपयोगी है। प्रस्तावित संशोधन संविधान के मूल ढाँचे में बिना कुछ परिवर्तन किए हुए जा सकते हैं। सच यह है कि इन बढ़े हुए अतिरिक्त मौलिक अधिकारों से हमारे संविधान के मूल ढाँचें को सुदृढ़ करने में सहायता ही मिलेगी।

देश में और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर ऋण की सीमा देश के सकल उत्पाद की निर्धारित सीमा से अधिक नहीं होनी चाहिए। इस सीमा के अंतर्गत लिए जाने वाले अंतर्राष्ट्रीय ऋण की व्यवस्था के पूर्व संसद की पूर्वानुमति लेना अनिवार्य होना चाहिए। सरकारी काम-काज की ही तरह न्यायालयीन काम-काज में विलम्ब होना पीड़ादायक सिद्ध हो चुका है।

उपसंहार

अपनी प्राचीन संस्कृति, सांस्कृतिक धरोहर, रामराज्य में बहने वाली दूध की नदियाँ, अध्यात्म आधारित हमारी जीवनशैली, स्वदेशी और विदेशी, धर्मनिरपेक्षता या धर्मांधता जैसी बातों पर व्यर्थ की चर्चा और संवाद जारी रखने की अपेक्षा हम देखें कि हमें चुनौती देती ज्वलंत समस्याएँ क्या-क्या हैं? गरीबी, बेरोजगारी, निरक्षरता का उन्मूलन, प्रतिदिन बढ़ने वाली भीषण सामाजिक और आर्थिक असमानता, उसके फलस्वरूप उपजने वाली अशांति, अन्याय आदि के सम्बन्ध में बोलने के लिए हमें आज शपथ लेना चाहिए। आणविक नि:शस्त्रीकरण (न्यूक्लियर डिसआर्मामेंट), अलिप्ततावाद (नॉन-अलाइनमेंट) का पुनरुज्जीवन, विश्व में सुख-शांति बनी रहे, इसके लिए पंचशील का प्रसार आदि को गौण स्थान देकर देश की एकता, संरक्षा और आर्थिक मजबूती पर हमें ध्यान केंद्रित करना चाहिए।

स्वतंत्रता का लाभ समाज के मुट्ठी भर लोगों को ही प्राप्त हो रहे है। यद्यपि इन लोगों की संख्या धीरे-धीरे वृद्धि हो रही है तो भी उससे आम नागरिक को किसी भी प्रकार का संतोष मिलता दिखाई नहीं देता है। इसके विपरीत अमीर और अधिक अमीर एवं गरीब और अधिक गरीब होते जा रहे हैं। भारत में आज ऐसा चित्र दिखाई दे रहा है। वर्तमान समय में अधिकतम लाभ अल्पसंख्यकों को ही प्रदान किया जा रहा है, ऐसा विचार जनता में फैल रहा है। इसमें संघर्ष और विस्फोट की चिंगारी समाहित है। यदि यह संघर्ष प्रारंभ हुआ तो वह केवल सामाजिक नहीं होगा, अपितु राष्ट्र विनाशी भी हो सकता है। इसका कारण यह है कि राज्यों में हो रहे विकास में भी उतना ही बड़ा अंतर दिखाई देता है। राष्ट्र अखंड रख कर विकास करना है तो आम जनता का जीवन-स्तर ऊपर करने का उत्तरदायित्व संपन्न और समर्थ वर्ग को भी स्वीकार करना होगा। सरकार को चाहिए कि अधिकतम कर वसूली करके, उसके द्वारा विकास करने का प्रयत्न करने के बजाय अपना खर्च कम करके विकास कार्य किये जाएँ। करों का परिमाण और दरें कम करके अधिक से अधिक पैसा समाज के हाथों में रहने दिया जाए। निजी, गैर सरकारी, धर्मार्थ एवं लोकोपयोगी संस्थाओं को करों से मुक्त करके प्रोत्साहित किया जाय। इससे जहाँ का धन वहीं रहेगा। इससे कर देने और लेने वालों के बीच सीधा संबंध स्थापित होगा और इससे समाज में सौहार्दपूर्ण वातावरण की निर्मिति होगी । आम आदमी को कम से कम अपनी आधारभूत आवश्यकताओं के लिए व्यर्थ की भाग-दौड़ नहीं करनी पड़ेगी।

क्रमश:

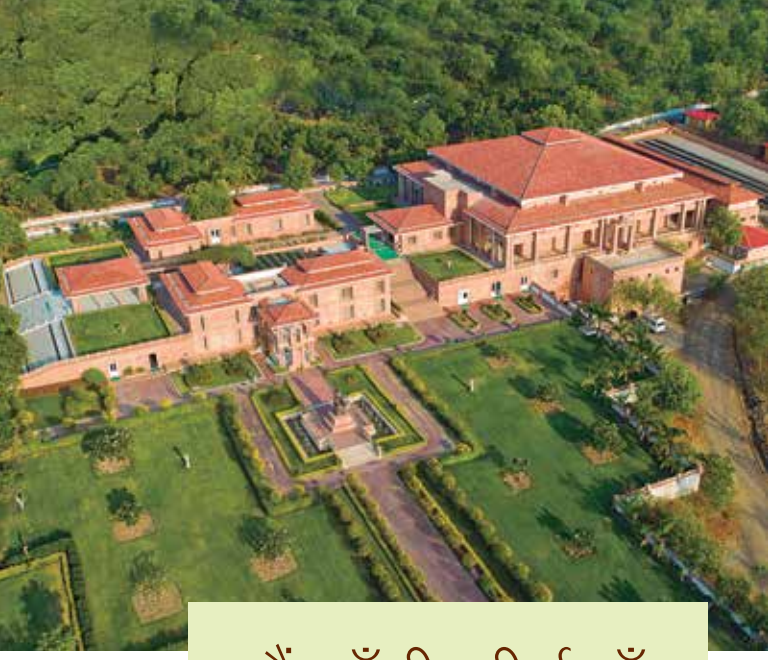

मैं गाँधी तीर्थ हूँ

मैं गाँधी तीर्थ हूँ।
समय की बागडोर पर सज़ा सितारा हूँ
मैं गाँधी तीर्थ हूँ।

भारत की धरोहर को संजोता
स्वतंत्रता की गाथा को परोसता
मोहन से महात्मा की कहानी हूँ
मैं गाँधी तीर्थ हूँ।

जहाँ तिरंगे की हर रोज होती है शान
गाँधी भजनों का होता है गुंजन गान
चरखे की धून में गुंजने वाली वह ध्वनि हूँ
मैं गाँधी तीर्थ हूँ।

मेरे भीतर आप आओगे,
शाश्वत मूल्यांकन खुद का पाओगे
सुस्थापित पर्यावरण की रवानी हूँ
मैं गाँधी तीर्थ हूँ।

अथांग में गूंजती बापू की अतुल वाणी
नए अवतार में यह बात विश्व ने जानी
मानवता को समर्पित ज्योतिर्मय रोशनी हूँ
मैं गाँधी तीर्थ हूँ।

जिसने मिट्टी को छूकर दिया तीरथ का रूप
कर्म-भावना, श्रमयोग का दिया यथार्थ स्वरूप
भवर के अभंग स्वप्न की वह निशानी हूँ*
मैं गाँधी तीर्थ हूँ।

**भवरलाल जैन (गाँधी तीर्थ के संस्थापक)*

– अश्विन झाला,
संपादक – गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन

गाँधी और शांतिवाद का भविष्य

सफल शांतिवाद के जीवित प्रतिपादकों में महात्मा गाँधी का स्थान सबसे ऊँचा है। उन्होंने यह दिखला दिया है कि क्रियात्मक शांतिवाद संसार की राजनीति में एक शक्ति हो सकती है। बल और दमन द्वारा शासन करने के हथियार से भी यह हथियार अधिक मजबूत साबित हुआ है। दक्षिण अफ्रीका में उनको पूरी सफलता मिली। हिंदुस्तान में उन्हें पर्याप्त सफलता मिली और अगर इसके प्रयोग करनेवालों की संख्या और अधिक होती और वह प्रयोग एकसमान हिंसा-रहित होता, तो महात्मा के इस शांतिमय अस्त्र की अवश्य विजय होती।

व्यावहारिक राजनीति के नाम से प्रसिद्ध क्षेत्र में शांतिवाद की शक्ति के इस सफल प्रयोग की कीमत कूती नहीं जा सकती और स्वाधीनता में प्रयत्नशील राष्ट्रों और जातियों के लिए तो वह भविष्य निर्देश करनेवाला प्रकाश-स्तंभ ही है।

साधारण मनुष्य जिन ढंगों को काम में लाता है, अहिंसा की प्रणाली उनसे बहुत भिन्न है। युग-युगांतर से एक ऐसी परंपरा चली आई है जिसने मनुष्य को भटकाकर यह मानने के लिए बाध्य कर दिया है कि बुराई की रोक हिंसा से ही हो सकती है। इन बातों को देखते हुए, अहिंसा की सफलता का महत्त्व और भी बढ़ जाता है। हिंसा का पक्ष करनेवाली इस परंपरा के होते हुए भी, गाँधीजी को इस अग्नि-परीक्षा का सामना करनेवाले इतने अधिक और, न्यूनाधिक इतने विश्वस्त अनुयायी मिल गए, यही, मेरी समझ में इस बात का प्रमाण है कि उनका जो उपदेश है वह मानव-प्रकृति का छिपा हुआ, मूलसत्य है और यह न तो ऐसा है, जो, आदर्श सामने होने पर भी साधारण स्त्री-पुरुषों की समझ में न आए और न ऐसा ही है कि वे उसको आचरण में न ला सकें और अपने महान उद्दश्यों की पूर्ति में उसका उपयोग न कर सकें।

इन्हीं कारणों से मेरा विश्वास हो गया है कि महात्मा गाँधी का जीवन आज सबसे अधिक मूल्यवान है। यद्यपि मैं उनकी ७० वीं वर्षगाँठ के लिए अपनी शुभकामना भेज रहा हूँ, फिर भी मेरी इच्छा होती है कि आज वे इससे कई वर्ष छोटे होते, जिससे दुनियाँ की यह आशा युक्तिसंगत होती कि गाँधीजी का प्रबुद्ध नेतृत्व उन्हें अनेक वर्षों तक मिलता रहे।

– लारेन्स हाउसमैन *(स्ट्रीट, सोमरसेट, इंग्लैंड)*
'गाँधी और शांतिवाद का भविष्य' से साभार, पृष्ठ क्र. ११४-११५

फाउण्डेशन की गतिविधियां

भारत की समृद्धि के लिए गाँधी तत्त्व अमल में लाएं – डॉ. अनिल काकोडकर

अहिंसा सद्भावना शांति यात्रा

गाँधीजी की १५० वीं जयंती पर विशेष कार्यक्रम

२ अक्तूबर महात्मा गाँधी का जन्मदिन, सारे विश्व में इसे विश्व अहिंसा दिन के रूप में मनाया जाता है। २ अक्तूबर २०१९ का दिन इतिहास में विशेष महत्त्व रखने वाला बना है, क्योंकि यह महात्मा गाँधी की १५०वीं जन्म जयंती का दिन है। विश्व के कई देशों ने इस दिन महात्मा गाँधी के सम्मान में कई कार्यक्रम, कई लेख, किताबें, डाक टिकट, विशेष पदक, सिक्के आदि प्रस्तुत किए हैं। यह उनके योगदान के प्रति सम्मान है।

बा–बापू१५० १८६९–२०१९

अहिंसा सद्भावना शांति यात्रा

आज के इस विशेष दिन पर गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन द्वारा 'अहिंसा सद्भावना शांति यात्रा' से १५०वीं जन्म जयंती का आरंभ किया गया। जलगाँव के सरदार वल्लभभाई पटेल टावर से डॉ. अनिल काकोडकर द्वारा हरि झंडी दिखाकर इस यात्रा का आरंभ किया गया। इस यात्रा का समापन गाँधी उद्यान में किया गया। इस यात्रा में करीब दो हजार से अधिक छात्र तथा अतिथियों ने हिस्सा लिया था।

विश्व अहिंसा दिवस के अवसर पर मंच पर उपस्थित गणमान्य

विश्व अहिंसा दिवस के अवसर पर उपस्थित अतिथियों द्वारा बापू की प्रतिमा को माल्यार्पण, गाँधी उद्यान, जलगाँव

गाँधी उद्यान में कार्यक्रम

विश्व अहिंसा दिन पर आयोजित मुख्य कार्यक्रम का आरंभ गाँधी उद्यान में हुआ। शुरुआत में गणमान्यों के हाथों महात्मा गाँधी, कस्तुरबा और लालबहादूर शास्त्री की प्रतिमा को पुष्प अर्पण कर दीप प्रज्वलन किया गया। अनुभूति स्कूल के छात्रों ने 'वैष्णव जन तो...' भजन प्रस्तुत किया तथा पिछले एक वर्ष के दौरान फाउण्डेशन द्वारा की गई गतिविधियों की समीक्षा फाउण्डेशन के अंबिका जैन ने प्रस्तुत की।

इस अवसर पर बा–बापू १५० के अंतर्गत चल रहे ग्राम विकास कार्यक्रम के बारे में कुछ ग्रामस्थों ने अभिप्राय प्रस्तुत किए। उसमें चोपड़ा तहसील में स्थित वैजापूर गाँव से अलकाताई कोली तथा जलगाँव तहसील में स्थित रामदेववाडी गाँव से जगदीश राठोड आदि का समावेश था। उनके गाँव में चल रहे विविध कार्यक्रमों के बारे में उन्होंने सविस्तर जानकारी दी।

अहिंसा शपथ

विश्व अहिंसा दिन के अवसर पर फाउण्डेशन के संचालक मंडल के सदस्य श्रीमान तुषार गाँधी ने उपस्थित सभी लोगों को अहिंसा शपथ दिलाई। इस शपथ कार्यक्रम में तुषार गाँधी के साथ नेशनल गाँधियन लीडरशिप कैंप में पधारे विभिन्न राज्यों के युवाओं ने साथ दिया। ये युवा अपनी पारंपरिक वेशभूषा में उपस्थित रहे थे।

विश्व अहिंसा दिवस पर संदेश

आज के इस विशेष दिन पर जिलाधिकारी डॉ. अविनाश ढाकणे ने तथा डॉ. अनिल काकोडकर ने अहिंसा पर संदेश प्रस्तुत किए।

डॉ. ढाकणे ने अपने मनोगत व्यक्त करते हुए कहा कि गाँधी विचारों से ही गाँव स्वावलंबी हो सकते हैं इसके लिए हर एक को मन से स्वच्छ होना आवश्यक है।

'हम यह शपथ लेते हैं कि...' अहिंसा शपथ लेते गणमान्य तथा छात्र समूह

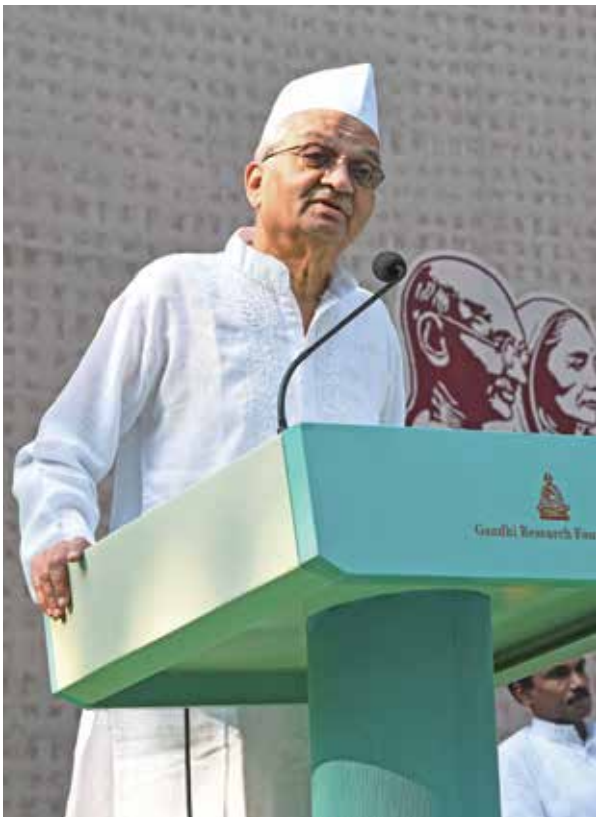

अहिंसा संदेश प्रस्तुत करते हुए डॉ. अनील काकोडकर

आज के मुख्य अतिथि डॉ. अनिल काकोडकर ने अहिंसा दिन पर संदेश प्रस्तुत करते हुए कहा कि हमारे जीवन में शाश्वत आनंद की अनुभूति करने के लिए हमें गाँधीजी के विचारों को अधिक गहराई से समझने की आवश्यकता है। मूल्य आधारित जीवन के जरिए ही हम कभी न खत्म होने वाले आनंद को प्राप्त कर सकते हैं। गाँधी विचारों से समृद्ध भारत कैसे निर्माण किया जा सकता है, इस विषय पर बोलते हुए डॉ. अनिल काकोड़कर ने आगे कहा कि, गाँवों को स्वावलंबी बनाने के लिए गाँधी विचारों से ग्रामीण स्तर पर निर्यात बढ़ाने के लिए प्रोत्साहन दिया जाना चाहिए। आहवानात्मक परिस्थिति में अपनी कल्पना द्वारा युवाओं को अवसर निर्माण करना चाहिए। ऐसा करने से हम गाँव को उनकी क्षमता के आधार पर विकसित कर सकते हैं। मानव कल्याण के लिए गाँधीजी द्वारा बताए हुए शाश्वत मूल्यों का आचरण करें। गाँधीजी के तत्त्वों से स्वयं को, समाज को साथ ही देश को और विश्व को समृद्ध करना हमारा कर्तव्य हैं।

गाँधी जयंती पर विशेष प्रदर्शनी

मुख्य कार्यक्रम के समापन के बाद मुख्य अतिथियों द्वारा दो विशेष प्रदर्शनी का उद्घाटन किया। फाउण्डेशन के अभिलेखागार में उपलब्ध बहुमूल्य दस्तावेज तथा शोध के जरिए महात्मा गाँधी के विभिन्न जन्मदिनों की झांकी प्रस्तुत करती विशेष प्रदर्शनी 'गाँधी जयंती' तैयार की गई थी। इस प्रदर्शनी में करीब २० पैनल के जरिए गाँधीजी अपना जन्मदिन किस तरह मनाते थे तथा लोगों के द्वारा भेजे गए खत, शुभकामनाएं तथा रोचक जानकारी को इस पैनल में दर्शाई गई है।

बापू के जन्मदिन की गाथा को प्रस्तुत करती विशेष प्रदर्शनी का अवलोकन करते हुए डॉ. अनिल काकोडकर, तुषार गाँधी, अशोक जैन, अतुल जैन, जलगाँव जिलाधिकारी डॉ. अविनाश ढाकणे, दलिचंद ओसवाल तथा अन्य गणमान्य

दुसरी प्रदर्शनी: जैन इरिगेशन के सहकारी आनंद पाटील द्वारा गाँधी तीर्थ के करीब १८ विभिन्न प्रकार के चित्र तैयार किए गए हैं। वाटर कलर से निर्मित इन चित्रों में गाँधी तीर्थ प्रवेश द्वार से लेकर विभिन्न मूर्तियां तथा अलग-अलग दृष्टिकोण से इमारत के नजारे को चित्रों में कैद किया गया है। इसके अलावा सूत के धागे से तैयार किए गए एक ढांचे में गाँधीजी को दर्शाया गया है। इन सभी चित्रों की एक प्रदर्शनी लगायी गयी थी। यह दोनों प्रदर्शनी करीब एक सप्ताह तक गाँधी उद्यान में प्रदर्शित की गई थी। इस सप्ताह के दौरान कई लोगों ने उनका लाभ उठाया।

इस पूर्ण कार्यक्रम में डॉ. अनिल काकोडकर, तुषार गाँधी, जलगाँव जिलाधिकारी डॉ. अविनाश ढाकणे, जिला पुलिस अधीक्षक डॉ. पंजाबराव उगले, जिला परिषद सीईओ बी. एन. पाटील, जलगाँव महानगर पालिका आयुक्त डॉ. उदय टेकाले, गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन के विश्वस्त सेवादास दलिचंद जी ओसवाल, अशोक जैन, ज्योति जैन, अनिल जैन, सभी धर्मों के धर्म गुरु तथा विभिन्न विद्यालय-महाविद्यालय के छात्र-छात्राएं, मीडिया उसमें से एक के प्रतिनिधि तथा जलगाँव नगर जन बड़ी मात्रा में उपस्थित थे।

गाँधी तीर्थ परिसर की मनोरम्य चित्रकारी, चित्रकार - आनंद पाटील

दिव्यांग छात्रों ने प्रस्तुत की बापू पर नाटिका

महात्मा गाँधी की १५०वीं जयंती के अवसर पर फाउण्डेशन द्वारा विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया गया था। २ अक्तूबर के दिन सायं के समय पर महात्मा गाँधी के जीवन के विभिन्न घटनाओं को नाटक के माध्यम से प्रस्तुत किया गया था। सबसे महत्त्वपूर्ण बात यह है कि यह नाटक का विशेष प्रतिभावान (Special needs) बच्चों के द्वारा मंचन किया गया। दिल्ली की द कलर्ड झेब्रा नामक संस्था ने विशेष प्रतिभावान बच्चों पर करीब आठ महीने तक थिएटर थेरपी कर नाटिका के पात्र के लिए तैयार किया गया।

चालीस मिनट की अवधि के लिए तैयार की गई इस नाटिका में अभिनय, संगीत तथा संवाद का सामंजस्य सुव्यवस्थित रूप से स्थापित किया गया था। इस नाटिका में दक्षिण अफ्रीका में गाँधीजी पर बीते अत्याचार की गाथा, नमक सत्याग्रह, डॉ. अम्बेडकर के साथ किया गया संवाद, रवीन्द्रनाथ टैगोर की भावना तथा भारत छोड़ो आंदोलन का समावेश किया गया था।

द कलर्ड झेब्रा द्वारा प्रस्तुत इस नाटिका में करीब १० दिव्यांग कलाकारों ने अपनी कला को प्रस्तुत किया। इस प्रस्तुति में बच्चों ने उत्कृष्ट अभिनय द्वारा श्रोताओं को यह महसूस नहीं होने दिया की यह विशेष प्रतिभावान बच्चों द्वारा प्रस्तुत किया गया है। कार्यक्रम के बाद सभी कलाकारों का उपस्थित अतिथियों द्वारा सूती माला से सत्कार किया गया।

जलगाँव स्थित अनुभूति अंतरराष्ट्रीय विद्यालय के प्रांगण में आयोजित इस कार्यक्रम में फाउण्डेशन के चेयरमैन डॉ. अनिल काकोड़कर, महात्मा गाँधीजी के प्रपौत्र तुषार गाँधी, साहित्य विद् डॉ. भालचंद्र नेमाडे, फाउण्डेशन के विश्वस्त सेवादास दलीचंद जी ओसवाल, अशोक जैन, अनिल जैन, अनुभूति स्कूल की संचालिका निशा जैन, प्राचार्य जे. पी. राव, डॉ. सुभाष चौधरी, द कलर्ड झेब्रा की वंदना सहगल, जैन परिवार, फाउण्डेशन परिवार तथा अनुभूति के छात्र उपस्थित थे।

विशेष प्रतिभावान बच्चों द्वारा प्रस्तुत नाटिका का दृश्य

देशभक्ति पर समूह गीत स्पर्धा में छात्रों ने लिया हिस्सा

अपने अनोखे अंदाज में देशभक्ति पर गीत प्रस्तुत करने में मग्न छात्र समूह

विश्व अहिंसा दिन के पूर्व १ अक्तूबर २०१९ के दिन विद्यालय के छात्रों के लिए देशभक्ती पर गीत गायन स्पर्धा आयोजित की गई थी। राष्ट्र निर्माण की विभावना में व्यक्ति का निर्माण एवं मूल्यों का निर्माण केंद्र स्थान पर है, इसलिए सामाजिक मूल्य जैसे एकता, सद्भावना, भाईचारा आदि मूल्यों के निर्माण के लिए छात्रों में विभिन्न उपक्रम के माध्यम से इस मूल्यों का सिंचन होना आवश्यक है। इसी उद्देश्य के आधार पर फाउण्डेशन द्वारा इस स्पर्धा का आयोजन किया गया। इस स्पर्धा में सहभागियों ने राष्ट्र भक्ति पर कई गीत प्रस्तुत किए जैसे वंदे मातरम्, स्वर्ग से सुंदर देश हमारा, चलो जवानों बढ़ो जवानों, बंदे में था दम, अखंड हिंदुस्तान, राष्ट्र की चेतना का गान वंदे मातरम् जैसे गीतों का समावेश किया गया था।

स्पर्धा दो गुटों में आयोजित की गई थी। पांचवीं से सातवीं कक्षा के छात्रों का एक गुट और आठवीं से दसवीं कक्षा के छात्रों का दूसरा गुट। जलगाँव के कांताई सभागृह में आयोजित इस स्पर्धा में जलगाँव जिला की १६ विद्यालय से करीब २४३ छात्रों ने हिस्सा लिया था। इस स्पर्धा में परीक्षक के रूप में दिपक चांदोरकर, दुष्यंत जोशी और सौ. रश्मि कुरंभट्टी ने महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा की।

इस स्पर्धा का पारितोषिक इस तरह से दिया गया – प्रथम गुट में प्रथम क्रमांक प्राप्त ओरियन सीबीएसई स्कूल को रु. ५,०००, द्वितीय क्रमांक प्राप्त विद्या इंग्लिश मीडियम स्कूल को रु. ३,००० पारितोषिक अर्पित किया गया। दूसरे गुट में प्रथम क्रमांक प्राप्त ए.टी. झांबरे माध्यमिक विद्यालय को रु. ५,०००, द्वितीय क्रमांक प्राप्त ओरियन सी.बी.एस.ई. माध्यमिक विद्यालय को रु. ३,००० तथा तृतीय क्रमांक प्राप्त पं.न. लुंकड कन्या विद्यालय तथा मिल्लत हाईस्कूल को रु. १००० का संयुक्त पारितोषिक प्रदान किया गया। स्पर्धा में हिस्सा लेने वाले सभी छात्रों को विशेष प्रमाणपत्र अर्पण किया गया।

इस कार्यक्रम में जलगाँव के कई विद्यालय, महाविद्यालय के छात्र, शिक्षकवृंद, सहभागियों के माता-पिता तथा मीडिया के प्रतिनिधी उपस्थित रहकर सहभागियों के हौसले को बढ़ावा दिया। फाउण्डेशन के सहयोगी अशोक चौधरी तथा कार्यक्रम के समन्वयक सुधीर पाटील ने इस कार्यक्रम को सफल करने में अपना महत्त्वपूर्ण योगदान दिया।

◆◆◆

संचालक मंडल की बैठक

फाउण्डेशन की संचालक मंडल की बैठक २ अक्तूबर २०१९ को जैन हिल्स पर आयोजित हुई। बैठक अध्यक्ष की भूमिका डॉ. अनिल काकोडकर ने अदा की। बैठक में तुषार गाँधी, अशोक जैन, अनिल जैन, दलिचंद ओसवाल तथा ज्योति जैन उपस्थित थे।

बैठक के दौरान फाउण्डेशन द्वारा पिछले बैठक में निर्धारीत किए गए और सदस्यों द्वारा स्विकृत मुद्दे तथा पिछले साल कार्यान्वित किए गए कार्यक्रम का रिपोर्ट प्रस्तुत किया गया।

बा-बापू १५०वीं जयंती के उपलक्ष्य में संभावित गतिविधियां जैसे अनुसंधान कार्य, विंटर स्कूल २०२० तथा ग्राम विकास के क्रियाकलाप मुख्य थे। फाउण्डेशन के अंतर्गत गतिविधियों को बेहतरीन ढंग से चलाने के लिए संचालक मंडल का मार्गदर्शन तथा सुझाव मिलता रहता है।

◆◆◆

संचालक मंडल की बैठक

नेशनल गाँधियन लीडरशिप कैंप २०१९

उत्कृष्ट एवं शाश्वत भविष्य के लिए आवश्यक है मूल्य व सिद्धांत की नींव पर समाज निर्माण हो। और यह तभी संभव है जब युवाओं में कटिबद्ध रूप से मूल्य की नींव को प्रस्थापित किया जाए। अगर हम ऐसे व्यक्ति को देखने का प्रयास करते हैं जिन्होंने बच्चों, युवाओं और वयस्कों तथा सभी वर्गों के लोगों को प्रेरित किया हो, उनमें गाँधीजी अग्र स्थान पर दिखाई देते हैं। यह इसलिए क्योंकि उन्होंने मूल्य व सिद्धांत आधारित जीवन को व्यवहारिक रूप में जिया है।

अगर युवाओं में ऐसे ही नेतृत्व का सिंचन कर के, गाँधी विचारों से रूबरू करवाना आवश्यक है। इसी उद्देश्य के आधार पर फाउण्डेशन ने बा–बापू १५० के अंतर्गत नेशनल गाँधियन लीडरशिप कैंप २०१९ का सफल कार्यान्वयन २६ सितम्बर से ५ अक्तूबर के दौरान किया। फाउण्डेशन ने इस श्रृंखला का आरंभ वर्ष २०१७ से किया है, वर्ष २०१९ में आयोजित होने वाला यह तीसरा नेशनल कैंप था। इस कैंप में भारत के चौदह राज्यों जिसमें मणिपुर, त्रिपुरा, मेघालय, असम, तमिलनाडु, पश्चिम बंगाल, केरला, झारखंड, उड़ीसा, उत्तर प्रदेश, राजस्थान, गुजरात, महाराष्ट्र और नेपाल से करीब ६७ युवा सम्मिलित हुए थे।

उद्घाटन कार्यक्रम

कैंप का उद्घाटन २६ सितम्बर के दिन हुआ। उद्घाटन कार्य का आरंभ उपस्थित अतिथियों द्वारा दीप प्रज्वलन कर किया गया। अनुभूति अंतरराष्ट्रीय विद्यालय के छात्रों ने बापू के प्रिय भजन की गूंज छेड़कर वातावरण को प्रफुल्लित कर दिया था। इस कार्यक्रम में अतिथियों के रूप में जलगाँव जिलाधिकारी डॉ. अविनाश ढाकणे, कवयित्री बहिणाबाई चौधरी उत्तर महाराष्ट्र विद्यापीठ के पूर्व कुलपति डॉ. के. बी. पाटील तथा फाउण्डेशन के संचालक सेवादास दलिचंद जी ओसवाल उपस्थित थे। उपस्थित शिविरार्थियों में एक राज्य के समूह ने दूसरे राज्य के समूह को सूती माला पहनाकर स्वागत किया तथा सामूहिक रूप से एक संदेश 'We the leaders are the first Servants' को प्रस्तुत कर एकता एवं सेवा की भावना को प्रस्तुत किया।

इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि डॉ. अविनाश ढाकणे ने शिविरार्थियों को संबोधित करते हुए कहा कि महात्मा गाँधीजी के नेतृत्व के मूल्य को समझने के लिए उन्होंने दिये हुए सत्य, अहिंसा, स्वच्छता आदि तत्त्वों का आचरण करना जरूरी है। युवा भारत की सशक्त ताकत है और गाँधी विचारों से ही उज्ज्वल भारत साकार करने के लिए युवाओं को आगे आना

दीप प्रज्वलन कर कैंप का उद्घाटन करते हुए अतिथि गण

'We the leaders are the first Servants' के उद्घोष वाक्य के साथ नेशनल गाँधियन लीडरशिप कैंप २०१९ का उद्घाटन कार्यक्रम का आरंभ

चाहिए। स्वच्छता का संस्कार भी अपनी कृति द्वारा आत्मसात कर एक सुखद समाज निर्माण कर सकता हैं। डॉ. अविनाश ढाकणे ने गाँधीजी के नेतृत्व कौशल्य पर भाष्य करते हुए कहा कि स्वयं के परिश्रम द्वारा समाज में परिवर्तन लाने की क्षमता गाँधीजी के नेतृत्व गुणों में थी। उज्वल भारत बनाने के लिए हमें स्वच्छता संस्कार को अंगीकार करना चाहिए। नई तकनीकी, सोशल मीडिया का उपयोग करते समय सतर्क रहना चाहिए। इस माध्यम से सकारात्मक विचारों का प्रचार एवं प्रसार करें। दिशादर्शक समाज निर्माण करने के लिए सभी ने प्रयास करना आवश्यक है।

इस उद्घाटन कार्यक्रम में उद्घाटक के रूप में डॉ. के. बी. पाटील उपस्थित थे। अपने उद्घाटन भाषण में उन्होंने कहा कि महात्मा गाँधी सहित स्वतंत्रता पूर्व के सभी नेताओं के नेतृत्व में स्वतंत्रता एवं जनसेवा की भावना थी। वर्तमान समय में राष्ट्र को आगे बढ़ाने के लिए युवाओं में नैतिक मूल्य आधारित नेतृत्व विकसित करना आवश्यक है। गाँधीजी का नेतृत्व 'सेवक नेतृत्व' था, आज भी हमें सेवक नेतृत्व की नींव को अधिक मजबूत करने की जरूरत है।

इस अवसर पर आशीर्वचन प्रस्तुत करने के लिए फाउण्डेशन के संचालक सेवादास दलिचंद ओसवाल तथा फाउण्डेशन की अनुसंधान डीन प्रो. गीता धरमपाल उपस्थित थे। सर्व प्रथम दलिचंद ओसवाल ने आशीर्वचन में कहा कि भाषा, प्रांत, धर्म में उलझने के बजाए त्याग और समर्पण की भावना के आधार पर हमारा देश कैसे आगे बढ़े इस बात पर गौर करना चाहिए। प्रो. गीता धरमपाल ने कहा कि गाँधीजी के नेतृत्व में मूल्यों की धरोहर दिखाई देती है, वे एक साधारण जीवन जीते हुए असाधारण कार्य कर रहे थे। उनका नेतृत्व सत्याग्रह में दिखाई देता है। दक्षिण अफ्रीका में उन्होंने महिलाओं को सत्याग्रह के लिए प्रेरित किया और एक अहिंसक आंदोलन में उनको सम्मिलित किया। इसी सामाजिक समानता पर आधारित नेतृत्व को हमें विकसित करना चाहिए।

उपस्थित अतिथियों का परिचय भुजंगराव बोबडे ने किया, फाउण्डेशन की गतिविधियों की संक्षिप्त जानकारी डॉ. जॉन चेल्लदुरै ने प्रस्तुत की तथा कार्यक्रम का सूत्र संचालन विद्या कृष्णमूर्ति और अश्विन झाला ने किया।

इस कैंप में विभिन्न विद्वानों को आमंत्रित किया गया था, जिससे गाँधीजी के विभिन्न नेतृत्व के आयामों को समझा जा सके।

डॉ. विश्वास पाटील

गाँधियन लीडरशिप कैंप में २७ सितम्बर के दिन वक्ता के रूप में प्राचार्य डॉ. विश्वास पाटील उपस्थित थे। डॉ. पाटील ने गाँधी विचार की प्रासंगिकता के मर्म विषय को प्रस्तुत किया। उन्होंने अपनी प्रस्तुति में गाँधीजी के जीवनकाल के महत्त्वपूर्ण पहलू जैसे बाल्यकाल, युवावस्था, आश्रम जीवन आदि के विभिन्न कालक्रम के संदर्भ में मोहनदास के संस्कार सिंचन की घटनाओं को प्रस्तुत किया। गाँधी के राष्ट्र धर्म की बात को प्रस्तुत करते हुए डॉ. पाटील ने कहा कि गाँधीजी की राष्ट्रधर्म की कल्पना थी, धर्म राष्ट्र की नहीं। गाँधीजी धैर्य के साथ अकेले खड़े थे, वे अकेले ही परिवर्तन के लिए निकल पड़े थे। डॉ. पाटील ने गाँधीजी के जीवन के विभिन्न घटनाक्रम को प्रस्तुत करते हुए कहा कि गाँधीजी जब भारत में आए थे तब एक साल तक भारत भ्रमण करने के बाद पहला भाषण बनारस हिंदू यूनिवर्सिटी में हुआ। इस भाषण में गाँधीजी के सत्य और अभय दर्शन होते दिखाई देते हैं, यह भाषण पूरा नहीं कर पाए तब तक एनी बेसंट ने उन्हें रोक दिया। भाषण अधूरा रहा पर उस भाषण ने क्रांति पूरी कर दी। इस अवसर पर कई शिविरार्थियों ने डॉ. पाटील को सवाल भी किए और डॉ. पाटील ने उनको अधिकृत जानकारी आधारित उत्तर भी दिए।

प्रो. जगदीश रत्नानी

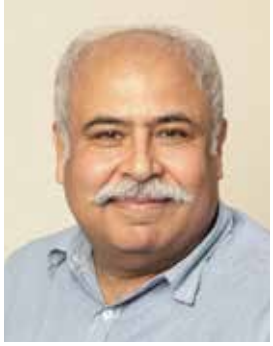

कम्यूनिकेशन कौशल हमारे जीवन का महत्त्वपूर्ण हिस्सा है, जब हम नेतृत्व की बात करते हैं तब कम्यूनिकेशन कौशल अग्र स्थान पर आता है। कम्यूनिकेशन के विभिन्न आयाम को प्रस्तुत करने के लिए भारतीय विद्या भवन निर्मित (SPJIMR) एस. पी. जैन इन्टिट्यूट ऑफ मेनेजमेन्ट एंड रिसर्च, मुंबई से प्रो. जगदीश रत्नानी उपस्थित थे। प्रो. जगदीश नैतिक व्यवसाय विषय में विद्वत्ता प्राप्त हैं। कम्यूनिकेशन के बारे में कहते हुए प्रो. जगदीश ने कहा कि विधायक संवाद साधने के लिए आत्मविश्वास, स्पष्टता, अचूकता, सरल रहन-सहन, प्रभावी, सारांशात्मक संक्षिप्त में बोलना, कौशलपूर्ण रूप से समझाना और परस्पर संवाद बनाए रखना, केवल यही संवाद का प्रमाणित नियम नहीं हैं। बल्कि इनमें नैतिक मूल्य का समावेश होना भी आवश्यक है। इस बात को प्रो. जगदीश ने विभिन्न नेतृत्व के उदाहरण द्वारा प्रस्तुत किया।

गाँधीजी के द्वारा किया गया कम्यूनिकेशन नैतिक मूल्य की नींव को प्रस्थापित करता है। उनमें सत्य, अहिंसा, पारदर्शिता, प्यार, सहकार, करुणा यह सभी मूल्य गाँधीजी के विचारों में दिखाई देते हैं। वे सहज रूप से इन मूल्यों का आचरण कर रहे थे, उनमें किसी भी प्रकार की व्यूह रचना नहीं थी। विधायक रूप में उनके नेतृत्व में यह स्पष्ट दिखाई देता है।

दिलीप कुलकर्णी

२९ सितम्बर को 'पर्यावरण और हमारी जीवनशैली' इस विषय पर

ज्येष्ठ पर्यावरण तज्ज्ञ दिलीप कुलकर्णी ने अर्थशास्त्रीय पद्धति से विकास की संकल्पना स्पष्ट की। विश्व के सभी देश जीडीपी बढ़ाने का ध्येय रखे हैं। इसके लिए प्राकृतिक संसाधनों का अधिकतर उपयोग कर पर्यावरण को बड़ी मात्रा में हानि पहुँच रही है। पर्यावरणीय प्रदूषण और वैश्विक स्पर्धा के कारण मनुष्य को तनाव के साथ-साथ शारीरिक व्याधियों का भी सामना करना पड रहा है। पर्यावरण संतुलन के लिए जीवनशैली बदलनी चाहिए। इसके लिए गाँधीजी के ग्राम स्वराज्य का विचार महत्त्वपूर्ण है, उसका प्रत्यक्ष जीवन में उपयोग करना चाहिए। शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक, अध्यात्मिक विकास से ही परिवार, समाज और उससे राष्ट्र के साथ-साथ निसर्ग का संतुलन रखा जाता है। इस संकल्पना से पर्यावरणीय संतुलन बनाए रखते हुए विकास साध्य किया जा सकता है, ऐसा प्रतिपादन दिलीप कुलकर्णी ने व्यक्त किया।

प्रो. गीता धरमपाल

फाउण्डेशन के रिसर्च डीन प्रो. गीता धरमपाल ने गाँधीजी पर प्रकाशित किए गए विभिन्न व्यंग चित्रों पर अपनी प्रस्तुति की। इस प्रस्तुति में दक्षिण अफ्रीका और भारत में गाँधीजी के विभिन्न सत्याग्रह पर समय-समय पर व्यंग चित्र अखबारों में या पत्रिकाओ में प्रकाशित किए गए थे। उनकी रोचक जानकारी के साथ प्रस्तुत किया। प्रो. गीता धरमपाल ने सत्याग्रह पर प्रकाश डालते हुए ९/११ के दिन घटित दो घटनाओं का विश्लेषण किया। उनमें गाँधीजी ने सत्याग्रह की नींव रखी वह दिन सितम्बर ११, १९०६ स्थल दक्षिण अफ्रीका तथा दूसरी एक घटना

अमेरिका में घटी वह दिन था सितम्बर ११, २००१ जिसमें ट्विन्स टावर पर हमला किया गया था। इन दो घटनाओं का विश्लेषण करते हुए प्रो. गीता ने कहा पहली घटना निर्माण व न्याय का प्रतीक है जब की दूसरी घटना विध्वंस और नाश का सूचक है। निर्माण व न्याय के बीज को बोया गाँधीजी ने जिसमें सत्य और अहिंसा केंद्र पर है इसलिए आज भी गाँधी को याद किया जाता है।

डॉ. जॉन चेल्लदुरै

फाउण्डेशन के शिक्षा विभाग के डीन डॉ. जॉन चेल्लदुरै ने शांति व संघर्ष परिवर्तन पर प्रकाश डालते हुए संघर्ष की परिभाषा तथा संघर्ष परिवर्तन के विभिन्न मॉड्यूल्स को प्रस्तुत किया। डॉ. जॉन ने संघर्ष को अवसर में तबदील करने वाले एक मौके के रूप में परिभाषित किया और कहा कि संघर्ष अवसर को निर्माण करता है। हमारे जीवन में संघर्ष केंद्र स्थान पर है उसे हमें सकारात्मक रूप में समझकर उनके उपाय खोजने कि दिशा में प्रयास करना चाहिए।

अंबिका जैन

फाउण्डेशन में अपना नेतृत्व प्रदान कर रहे अंबिका जैन ने संविधान की समानता एवं हमारे संविधान को समझने के लिए विभिन्न पहलू पर प्रकाश डालकर शिविरार्थियों को लोक-तंत्र के मूल्यों और हमारी जिम्मेदारी को प्रस्तुत किया। अंबिका जैन ने आगे कहा कि जब हम अधिकार की बात करते हैं तब उनके साथ कर्तव्यों को स्वीकृत करना चाहिए। इसी दृष्टिकोण से हम अपने संविधान को समझ सकते हैं और राष्ट्र निर्माण में अपना योगदान प्रदान कर सकते हैं।

आदर्श गाँव पाटोदा की मुलाकात

इस कैंप के दौरान स्थानिक स्वराज्य संस्थाओं में नेतृत्व आधारित बदलाव की आदर्श स्थिति को देखने के लिए महाराष्ट्र के औरंगाबाद स्थित पाटोदा गाँव की मुलाकात के लिए गए थे। इस मुलाकात में हमारे शिविरार्थियों ने पाटोदा गाँव की मुलाकात एवं वहाँ के सरपंच श्रीमान भास्करराव पेरे से मुलाकात की। इस मुलाकात में भास्करराव ने गाँव में लाए बदलाव की स्थिति की गाथा को प्रस्तुत करते हुए स्थानिक नेतृत्व

के जरिए हम अपने प्रदेश और गाँव को बदलाव की दिशा में आगे बढ़ा सकते हैं। उनके लिए धैर्य और निष्ठा से कार्य के प्रति समर्पण भाव रखना आवश्यक है।

आदर्श गाँव पाटोदा के सरपंच भास्करराव पेरे के साथ युवा समूह

लैंगिक अध्ययन

इस कैंप के दौरान विशेष रूप से एक पैनल का आयोजन किया गया था। इस पैनल में अंबिका जैन, विद्या कृष्णमूर्ति, जर्मनी से आए हुए इंटर्न जिसमें तमारा, फिलिप, ब्रेट्टिना तथा फाउण्डेशन में शोध कर रही नबीला का समावेश किया गया था। इस पैनल ने लैंगिक विषयक पूर्व भूमिका, भारत के संदर्भ में हो रही असमानता तथा उनके निराकरण के लिए बनाए गए कानून तथा जर्मनी के संदर्भ में लैंगिक अध्ययन को देखने के नजरिये को प्रस्तुत किया था। यह एक खुला सत्र था जिसमें शिविरार्थियों से कई सवाल भी उठे थे, यह सत्र एक चर्चा में तबदील हुआ।

सूफी कार्यक्रम

इस कैंप के दौरान दिल्ली विश्वविद्यालय की हिंदी विषय की प्रोफेसर मेधा पुस्कर तथा साथ में प्रभजोत सिंह उपस्थित थे। प्रो. मेधा ने भारत के विभिन्न प्रांतों की संत परंपरा की गाथा को प्रस्तुत किया। उसी गाथा व तत्त्व को प्रभजोत सिंह ने सूफी गीतों में पिरोया था। गाँधी तीर्थ के कस्तूरबा हॉल में दो घंटे तक चले इस कार्यक्रम में प्रभजोत सिंह ने करीब विभिन्न आठ सूफी रचनाओं को प्रस्तुत किया। इसी संध्या कार्यक्रम में अनुभूति इंटरनेशनल स्कूल के छात्र तथा शिक्षक वृंद ने तबला और हार्मोनियम पर जुगल बंदी कार्यक्रम प्रस्तुत किया था। इन दो कार्यक्रमों ने उपस्थित श्रोताओं के दिलों को जीत लिया था।

सूफी संगीत की महफिल का दृश्य

दिनचर्या

इस कैंप की दिनचर्या में सुबह प्रेरणा गीत, योगा–प्राणायम, विचार कणिका, श्रमदान, पक्षी निरीक्षण, गौशाला व्यवस्थापन, पीस वॉक, समूह प्रार्थना, सूत कताई जैसे कार्य दो घंटे के लिए चलते थे। दोपहर में चार सत्र आयोजित किये जाते थे। इस के अलावा शिविरार्थी द्वारा अपने राज्य की सांस्कृतिक धरोहर प्रस्तुत की जाती थी। शिविरार्थियों द्वारा विभिन्न विषयों पर चर्चा–संवाद तथा शांति व मूल्य को समझने के लिए विभिन्न खेलों का आयोजन किया जाता था।

इस कैंप के दौरान दो बार सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए गए थे जिनमें विभिन्न राज्यों के लोक नृत्य व लोक संगीत की झलक प्रस्तुत की गई थी।

चरखा हमारे शरीर, मन और आत्मा का सामंजस्य स्थापित करता हैं, शिविरार्थियों ने किया अनुभव

प्रयोग किए गए पानी का शुद्धिकरण प्रकल्प का अवलोकन, पाटोदा गाँव

समापन कार्यक्रम के दौरान संबोधन करते हुए अशोक जैन साथ में अंबिका जैन, प्रो. गीता धर्मपाल एवं डॉ. जॉन चेल्लदुरै

समापन कार्यक्रम

इस लीडरशिप कैंप के समापन कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में जैन इरिगेशन सिस्टम्स ली. के चैअरमन और गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन के संचालक अशोक जैन उपस्थित थे। इस समापन कार्यक्रम में उपस्थित शिविरार्थियों ने श्रीमान अशोक जैन को कई सवाल पूछे। फाउण्डेशन के संस्थापक के बारे में एवं उनकी कार्यशैली के बारे में पुछे गए सवाल का प्रत्युत्तर देते हुए अशोक जैन ने कहा कि पद्मश्री डॉ. भवरलालजी जैन के संघर्षपूर्ण एवं प्रेरक जीवन प्रवास के विविध पहलू से उपस्थित युवाओं को अवगत कराया। भवरलालजी जैन ने श्रम को प्रतिष्ठा दिलाई, जीवन में सफल होना है तो कष्ट करने के अलावा कोई विकल्प नहीं है, ऐसा मंत्र भी अशोक जैन ने दिया। जैन इरिगेशन व उनकी कार्य पद्धति पर पूछे गए सवाल का प्रत्युतर देते हुए कहा कि जैन इरिगेशन यह कंपनी मूल रूप से सामाजिक तत्त्वों का विचार करने वाली कंपनी है। बड़े भाऊ ने हमें यह सिखाया कि, जो समाज से लिया है, वह समाज को वापस देना है। इसी के अनुसार कंपनी के मुनाफे का बड़ा भाग सामाजिक उपक्रमों में खर्च किया जाता है। आगामी समय में सामाजिक उपक्रमों की संख्या में बढ़ोत्तरी होगी। इस अवसर पर उपस्थित शिविरार्थियों में से प्रतिनिधिक तौर पर चार शिविरार्थियों ने अपने अभिप्राय व्यक्त किए। तथा अतिथियों के द्वारा सभी सहभागियों को प्रमाणपत्र प्रदान किया गया।

शिविरार्थियों के अभिप्राय: सभी युवाओं ने अपने अनुभव कथन साझा किए उनमें से कुछ ही अभिप्राय यहाँ प्रस्तुत कर रहे हैं।

पायल रामटेके: गाँधीजी के विचारों को लेकर जीवन को किस प्रकार से बेहतर बनाया जाना चाहिए यह सीखने को मिला।

दिनेश असल: इस कैंप से मैं गाँधीजी के विचारों को नजदीक से जान पाया। मैं भी गाँव में जाकर अपना नेतृत्व देने का निश्चय करता हूँ।

विवेक रंजन: व्यक्तित्व विकास, सामाजिक नजरिया और नेतृत्व की सच्ची भावना के विकास के लिए यह कैंप उपयुक्त है। विनम्रता, व्यवहार कुशलता और समय पालन करना मैंने इस कैंप के दौरान सीखा है।

कान्सियार खारकोंगोर: Most Important thing I would take home is not to waste food and take according to my ability. Going to teach and share this thing to all at home.

◆◆◆

सेवा, सुरक्षा और सलामती के लिए गाँधी तीर्थ का प्रयास

गाँधी तीर्थ पर प्रति वर्ष करीब ६०,००० से अधिक मुलाकाती आते हैं। आने वाले मुलाकाती के लिए यह दौरा बेहद सुखद व यादगार बनाने के लिए विभिन्न तरह की गुणवत्ता में सुधार किया जा रहा है। पिछले चार सालों में ISO के अंतर्गत गाँधी तीर्थ की सेवा में गुणवत्ता, पर्यावरण व सुरक्षा के संदर्भ में समय-समय पर सुधार किया जाता है। हाल ही में हमारे कार्यकर्ता सुधीर पाटील आपदा व्यवस्थापन प्रशिक्षण के लिए २३ से २६ सितम्बर २०१९ चार दिन पूना गए थे। NIDM, New Delhi (National Institute of Disaster Management) तथा यशदा, पुने के संयुक्त रूप से आयोजित कार्यक्रम आपातकालिन व्यवस्थापन विषय पर पुणे में कार्यशाला का आयोजन किया गया था। इस कार्यशाला में चार राज्यों के कुल ५५ सहभागी उपस्थित थे। राष्ट्रीय स्तर पर कार्यरत संग्रहालय एवं सांस्कृतिक संवर्धन संस्थाओं से ये विद्वान् कार्यशाला में उपस्थित थे। जैसे राजा केलकर संग्रहालय-नेहरू विज्ञान केंद्र, गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन, जलगाँव जैसे निजी तथा सरकारी संग्रहालय से अभियंता, विद्यार्थी, संचालक, सहसंचालक, क्युरेटर, मार्गदर्शक (Guide), संवर्धन क्षेत्र के विशेषज्ञ इस कार्यशाला में सहभागी हुए थे।

इस कार्यशाला में डॉ. चंद्राणी बंदोपाध्याय (सहायक प्राध्यापक, एनआईडीएम, न्यू दिल्ली) ने आपातकालिन व्यवस्थापन की संरचना एवं निर्धारित ढांचे के मानदंड के बारे तथा आपातकालिन स्थिति में भारत की सांस्कृतिक धरोहर को कैसे पुनः स्थापित किया जा सकता है इस विषय पर अपने विचार प्रस्तुत किए। डॉ. तेजस गर्गे (संचालक, आर्कियोलॉजी तथा म्यूजियम विभाग महाराष्ट्र) ने सांस्कृतिक धरोहर, स्मारक का संरक्षण करने में आम आदमी की भूमिका तथा व्यवस्थापन पर प्रकाश डाला।

फाउण्डेशन के कार्यकर्ता सुधीर पाटील अपना अनुभव साझा करते हुए

इस कार्यशाला में आपातकालिन स्थिति में क्या योजना तैयार करना चाहिए, ऐतिहासिक सामग्री का संरक्षण कैसे किया जाए तथा स्मारक का संरक्षण कैसे करना चाहिए ताकि सदियों तक टिक सके। इस विषय में अधिक जानकारी दी गई।

◆◆◆

'गाँधी तीर्थ नई पीढ़ी के लिए प्रेरणा स्थान' – मुख्यमंत्री अशोक गहलोत

गाँधी तीर्थ मुलाकात के दौरान राजस्थान के मुख्यमंत्री श्रीमान अशोक गहलोत तथा अन्य मान्यवर

महाराष्ट्र के जलगाँव स्थित गाँधी तीर्थ ने बहुत ही कम समय में सारे विश्व का ध्यान आकर्षित किया है। देश–विदेश से कई दर्शक इस संग्रहालय को देखने के लिए आते हैं। हाल ही में २७ सितम्बर २०१९ के दिन राजस्थान के मुख्यमंत्री श्रीमान अशोक गहलोत तथा उनका समूह गाँधी तीर्थ मुलाकात के लिए पधारे थे।

वर्तमान एवं भावी पीढ़ी को गाँधी विचार से परिचित करवाने तथा उनके विचार आधारित समाज की दिशा में आगे बढ़ने के उद्देश्य से डॉ. भवरलाल जी जैन ने गाँधी तीर्थ की स्थापना कर यह स्मारक मानवता को समर्पित किया है। सत्य, अहिंसा, आपसी सहयोग की भावना का वैश्विक स्तर पर विकास करने की दिशा में यह संस्थान अविरत कार्यरत है। इस संस्थान की गतिविधियों में गाँधी तीर्थ संग्रहालय मुख्य है। अत्याधुनिक मल्टिमीडिया द्वारा निर्मित इस संग्रहालय में गाँधीजी के जीवन को करीब तीस खंडों में दर्शाया गया हैं।

श्रीमान अशोक गहलोत ने करीब तीन घंटे इस गाँधी तीर्थ संग्रहालय में बिता कर बापू के जीवन के विभिन्न पहलू को जाना। इस मुलाकात के दौरान हमारे सहकारी ने गाँधीजी और राजस्थान से संबंधित कई रोचक तथ्य मुख्यमंत्री जी के साथ साझा किए। साथ ही संग्रहालय में जिस शैली से बापू की जीवनी को दर्शाया गया है, इस प्रयास की सराहना करते हुए मुख्यमंत्री अशोक जी ने की। इस दौरान फाउण्डेशन के अत्याधुनिक अभिलेखागार में संरक्षित गाँधीजी तथा विनोबा जी का बृहत् साहित्य को देखा, अमूल्य दस्तावेज़ संरक्षित करने वाली प्रयोगशाला, ग्रंथालय तथा खादी शोध एवं उत्पादन विभाग की भेंट कर मुख्यमंत्री जी ने प्रसन्नता दर्शाई। इस मुलाकात के दौरान फाउण्डेशन की अन्य गतिविधियां जैसे गाँधी विचार संस्कार परीक्षा तथा बा–बापू १५० के अंतर्गत चल रहे क्रियाकलापों को राजस्थान में आरंभ करने की तैयारी दर्शाई तथा इस दिशा में सकारात्मक कदम उठाने का निर्देश भी अपने समूह को दिया।

इस मुलाकात के आरंभ में फाउण्डेशन के संचालक तथा जैन इरिगेशन के अध्यक्ष श्रीमान अशोक जैन ने मुख्यमंत्री अशोक गहलोत को सूती माला पहनाकर स्वागत किया। राजस्थान से पधारे इस समूह में मुख्यमंत्री के साथ राजस्थान के कृषि मंत्री लालचंद कटारिया, खदान व गोपालन मंत्री प्रमोद भाया, आमदार रोहित बोहरा तथा मुख्य सचिव कुलदीप रांका उपस्थित थे। इस मुलाकात के दौरान जैन इरिगेशन के सह व्यवस्थापक अजीत जैन, अतुल जैन, जैन फार्म फ्रेश फूड्स के संचालक अथांग जैन सौ. अंबिका जैन, जैन परिवार के सदस्य तथा गाँधी तीर्थ के समन्वयक उदय महाजन उपस्थित थे।

◆◆◆

मुख्यमंत्री अशोक गहलोत का गाँधी तीर्थ के लिए दिया गया अभिप्राय

शानदार प्रयास व प्रतिबद्धता से ही संभव हो सका। शायद ही कोई जगह ऐसा म्यूजियम बनाया गया है। बधाई, शुभकामनाओं के साथ बाबूजी ने जो सपना देखा, नई पीढ़ी के लिए वह सफल रहा।

अशोक गहलोत,
मुख्यमंत्री, राजस्थान

अतिथि देवो भव!

महात्मा गाँधी के जीवन एवं उनके कार्यों को गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन स्थित 'खोज गाँधीजी की' संग्रहालय में अत्याधुनिक तकनीक के साथ समन्वित करके युवाओं के लिए कैसे उपयोगी बनाया गया है? इसे देखने व समझने के लिए अतिथियों का स्वाभाविक प्रवाह होता रहता है। अतिथि हमारे लिए देवतुल्य हैं।

सेंट जोसेफ कॉन्वेन्ट स्कूल के छात्र, चालिसगाँव, महाराष्ट्र १०.०९.२०१९

आगंतुकों का समूह, अहमदाबाद ०१.०९.२०१९

जयंत नारलिकर, खगोल वैज्ञानिक, सौ. मंगला नारलिकर, गणितज्ञ, महाराष्ट्र १६.०९.२०१९

देवाशिष पौल, चुनाव पर्यवेक्षक, मैसोर तथा दलिचंद ओसवाल २८.०९.२०१९

उमेशकुमार, जिलाधिकारी, बुरहानपुर २३.१०.२०१९

R.N.I. No. MAHBIL/2017/77584 / Postal Registration No.: JAL/421/2019-2021
Posted at Jalgaon head post office, from 2nd of every month, Date of publication: 28th of every month.

मोहन से महात्मा – चित्र शृंखला–३०

गाँधी और जिन्ना

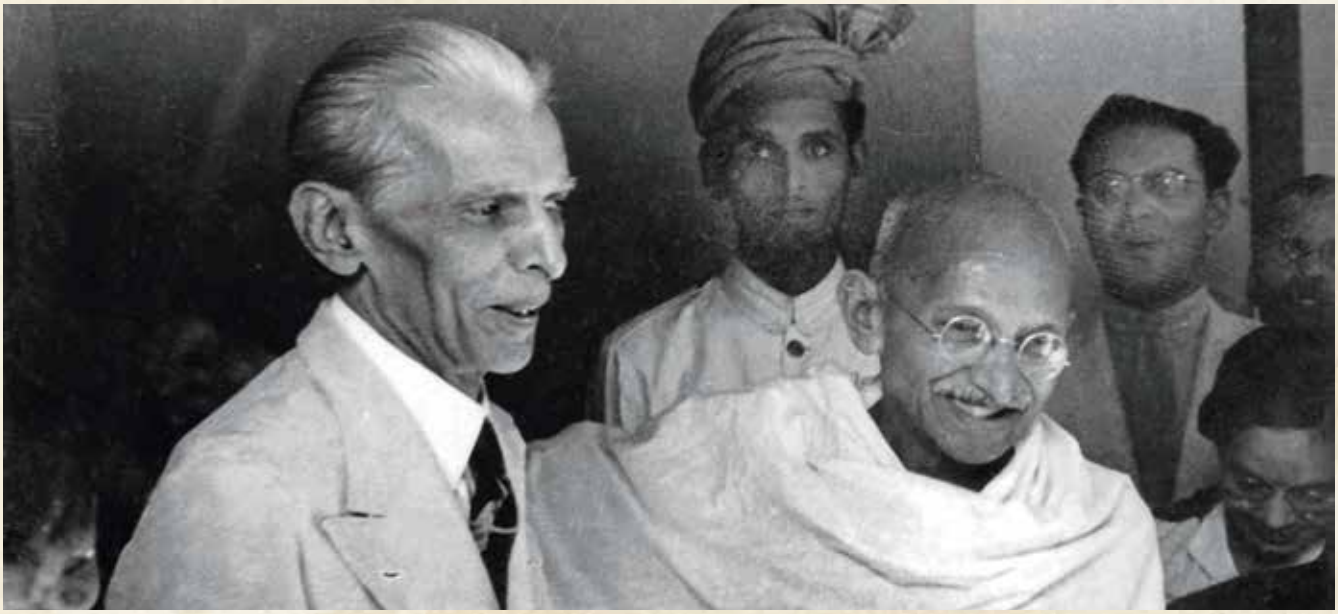

एम. ए. जिन्ना, महात्मा गाँधी का स्वागत करते हुए, मुंबई, सितम्बर ९, १९४४

मुंबई में महात्मा गाँधी, एम. ए. जिन्ना के साथ वार्तालाप के समय, १९४४

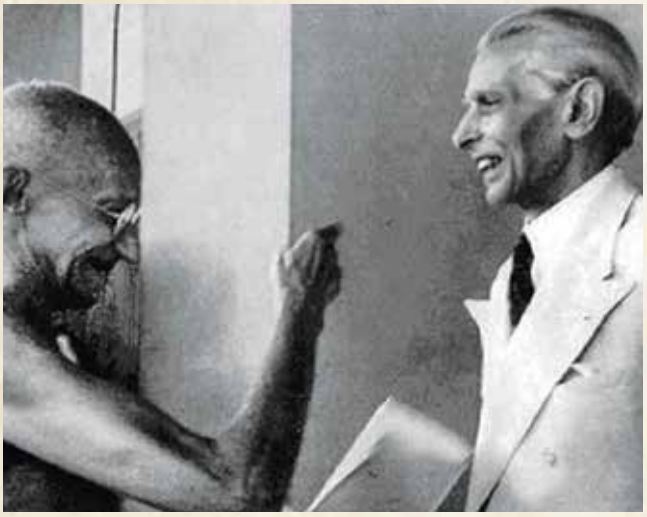

महात्मा गाँधी, एम. ए. जिन्ना के साथ मुंबई, सितम्बर ९, १९४४

एक समय था जब मैं आपको (एम. ए. जिन्ना) मातृभाषा में बोलने के लिए प्रेरित कर सका था। आज मैं इस भाषा में लिखने का साहस कर रहा हूँ। आपको मिलने का निमंत्रण तो मैं जेल से दे चुका हूँ। जेल से रिहा होने के बाद मैं आज तक आपको नहीं लिख सका। लेकिन आज लिखने को प्रेरित हुआ हूँ। आप जब चाहें तब मिलें। मुझे इस्लाम का अथवा यहाँ के मुसलमानों का दुश्मन न मानें। मैं तो (सदा) आपका और सारे संसार का मित्र तथा सेवक रहा हूँ। मेरा त्याग न करना।

– महात्मा गाँधी

There was a time when I was able to persuade you (M. A. Jinnah) to speak in our mother tongue. Today I venture to write in the same. I had already invited you while I was in jail. After my release I have not written to you so far. But today I am prompted to do so. Let us meet when you wish to. Please do not regard me as an enemy of Islam and the Muslims here. I have always been a friend and servant of yours and of the whole world. Do not dismiss me.

- Mahatma Gandhi

Printed Matter

IF UNDELIVERED PLEASE RETURN TO:
Gandhi Research Foundation
Gandhi Teerth, Jain Hills, Jalgaon - 425001 (M.S.) India; Tel: +91-257-2264801

गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन (स्वामित्व) के लिए खोज गाँधीजी की यह मासिक मुद्रक, प्रकाशक अशोक भवरलाल जैन, संचालक, गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन ने आनंद पब्लिकेशन्स, १०६/१, मुसली फाटा, ता.धरणगाँव, जि.जलगाँव–४२५१०३, महाराष्ट्र से मुद्रित करके गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन, गाँधी तीर्थ, जैन हिल्स, पोस्ट बॉक्स नं. ११८, जलगाँव–४२५००१, महाराष्ट्र से प्रकाशित किया। संपादक – अश्विन भामाभाई झाला* (*पी.आर.बी. कायदे के अनुसार संपादकीय जिम्मेदारी इनकी है।)

प्रकाशन: २ नवम्बर, २०१९